Madhya Bharti
Humanities and Social Sciences

मध्य भारती
मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN: 0974-0066

पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली के साथ विश्वविद्यालयी शैक्षिक प्रणाली के एकीकरण की संभावनाओं का अध्ययन

लक्ष्मी गुप्ता
शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा
शोध पर्यवेक्षक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में पारंपरिक शिक्षण प्रणाली के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधि का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें वेदों, उपनिषदों और पुराणों में लिखित शिक्षण प्रणाली से तथ्यों का संकलन किया गया है। इसमें यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली पूर्णतः वैज्ञानिक और सभी विषयों का समावेश रखती थी तथा इसकी शिक्षण विधि में भी विभिन्नता थी और यह सभी प्रकार के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हुआ करती थी। इस प्रकार इस शोध पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि परंपरागत शिक्षण प्रणाली अपने समय में तो श्रेष्ठ थी ही और यह आज के समय में भी कारगर सिद्ध हो सकती है।

मुख्य शब्द - पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि

प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति में शिक्षा का प्रारम्भ गायत्री मंत्र से होता था। इस मंत्र में विद्यार्थी यह प्रार्थना करता था कि उसकी बुद्धि सन्मार्ग की ओर अग्रसित हो। छात्र को आश्रमों, गुरूकुलों एवं मठों इत्यादि में तपस्वियों जैसा सादा तथा कठोर जीवन व्यतीत करते हुये अनेक प्रकार के ग्रन्थों एवं साहित्यों का अध्ययन करना पड़ता था। प्राचीन भारत में आधुनिक काल की भाँति शिक्षण संस्थाओं के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते, जो एक निर्धारित अवधि में निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा लेकर विद्यार्थी को डिग्री अथवा उपाधि प्रदान करती हो। प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की एक महत्वपूर्ण व्यवस्था यह भी थी कि विद्यार्थी जब तक पिछले अध्याय को पूर्ण रुप से कण्ठस्थ नहीं कर लेता था तब तक उसे गुरू द्वारा अगला अध्याय नहीं पढ़ाया जाता था। इस प्रकार समावर्तन संस्कार तक विद्यार्थी अपने विषय में पूर्ण रुपेण पारंगत हो जाता था। तत्पश्चात् उसे स्नातक की उपाधि प्राप्त होती थी और इसके लिये उसे विद्वानों की सभा में शास्त्रार्थ भी करना पड़ता था। किन्तु आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षण संस्थाओं द्वारा एक पाठ्यक्रम निर्धारित कर दिया जाता है और परीक्षा में मात्र 33 प्रतिशत अंक प्राप्त करके विद्यार्थी अगली कक्षा में प्रवेश कर जाता है। यही क्रम आगे भी चलता रहता है और तब तक चलता है जब तक विद्यार्थी परीक्षायें देता रहता है। अन्ततः वह मात्र 33 प्रतिशत अंक के साथ ही विभिन्न उपाधियां भी प्राप्त कर लेता है।

यद्यपि प्राचीन भारत में शिक्षण संस्थाओं अथवा विद्वत परिषदों द्वारा निर्धारित अवधि के लिये किसी विशेष

ISSN: 0974-0066

पाठ्यक्रम का निर्धारण नहीं होता था तथापि हम यह नहीं कह सकते कि तत्कालीन शिक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम व्यवस्था ही नहीं थी। प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अध्ययन के उपरांत हम यह कह सकते है कि प्राचीन काल में पाठ्यक्रम होते थे जिनका निर्माण समाज एवं व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता था। आवश्यकताओं के बदलने पर पाठ्यक्रमों में भी बदलाव होते रहते थे। ज्यों-ज्यों ज्ञान के क्षेत्र में नयी-नयी उपलब्धियां प्राप्त की जाती रही, त्यों-त्यों नयी पीढ़ी को उस ज्ञान से परिचित कराने के लिये पाठ्यक्रमों में बदलाव किये जाते रहे। इसी क्रम में नवीन ज्ञान के द्वारा जीवन और समाज के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन होते रहे। ज्ञान-विज्ञान की नवीन परम्परा और पुराने ज्ञान में हुये परिवर्तन के द्वारा पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन होते रहे, उसका प्रभाव हमे प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में क्रमशः विकसित होते हुये पाठ्यक्रम के रुप में परिलक्षित होता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में पाठ्यक्रम का विकास वैज्ञानिक रुप से हुआ था जिसका निर्धारण व्यक्ति और समाज के हितों को ध्यान में रखते हुये विद्वान शिक्षाविदों द्वारा किया गया था। विषय को अधिक सरलता से समझाने के लिये इसे विभिन्न विभागों (संकायों) में विभक्त किया गया था। चूँकि प्राचीन भारत में शिक्षा मुख्यतः गुरूकुलों अथवा आश्रमों में प्रदान की जाती थी। अतः गुरू ही वहाँ का सर्वोच्च अधिकारी माना जाता था। विभिन्न विभागों (संकायों) के विभागाध्यक्ष तथा विषयों के विशेषज्ञ गुरू के अधीन तथा निरीक्षण में रहते हुये छात्रों को समुचित ज्ञान प्रदान करते थे। डॉ0 राधाकुमुद मुखर्जी (1974) महोदय ने अपनी पुस्तक "एंशियण्ट इण्डियन एजूकेशन" में विभिन्न प्रकार के विभागों (संकायों) का वर्णन किया है। जिसका विवरण इस प्रकार है।

प्राचीन भारत में शिक्षा से सम्बन्धित संकाय:

(1) अग्नि स्थान (अग्नि संकाय): गुरूकुल में विद्यार्थी का सर्वोच्च कर्तव्य यज्ञ करना था। यज्ञ सृष्टि का मूल था तथा देवता तक इससे शक्ति ग्रहण करते थे। देवताओं तथा मनुष्यों के बीच सम्बन्ध स्थापन में यज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अग्नि स्थान में विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक रुप से यज्ञ तथा अग्नि की उपासना तथा प्रार्थना की जाती थी। इस संकाय में यज्ञ से सम्बन्धित विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में विद्यार्थियों को सिखाया जाता था।

(2) ब्रह्म स्थान (ब्रह्म संकाय): ब्रह्म स्थान में वेद और इससे सम्बन्धित विभिन्न साहित्य, जैसे- वैदिक संहितायें, ब्राह्मण ग्रंथ, अरण्यक, उपनिषद और वेदांग का अध्ययन कराया जाता था।

(3) विष्णु स्थान (विष्णु संकाय): यह व्यवहारिक विद्याओं का केन्द्र था। व्यवहारिक विद्यायें तीन प्रकार की थी- दण्ड नीति (राजनीति शास्त्र), अर्थनीति और वार्ता (कृषि, पशुपालन तथा व्यापार)।

(4) महेन्द्र स्थान (महेन्द्र संकाय): इस संकाय का सम्बन्ध सैनिक शिक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम से था। जहाँ विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों तथा युद्ध संचालन से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की शिक्षा प्रदान की जाती थी।

(5) विवस्वत स्थान (विवस्वत संकाय): यह संकाय ज्योतिष्य विद्या के ज्ञान से सम्बन्धित था। जहाँ इनसे सम्बन्धित विविध विषयों- नक्षत्र, ज्योतिष्य फलित, ज्योतिष्य गणित आदि का अध्ययन कराया जाता था।

ISSN: 0974-0066

(6) **सोम स्थान (सोम संकाय):** इस संकाय में विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों का ज्ञान प्रदान किया जाता था। इसके अन्तर्गत उद्यान, वन, औषधि आदि से सम्बन्धित विषय पढ़ाये जाते थे।

(7) गरुण स्थान (गरुण संकाय): इस संकाय के अन्तर्गत वाहन तथा परिवहन से सम्बन्धित विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्राचीन भारत में विभिन्न प्रकार के वाहनों का उल्लेख प्राप्त होता है। जैसे- विमान, नौका, रथ, विभिन्न प्रकार की बैलगाड़ी, गज, अश्व, उष्ट्र आदि। परिवहन के लिये सड़कों, पुल, बाँध आदि के निर्माण का भी ज्ञान प्रदान किया जाता था। इस संकाय में इन सभी पाठ्यक्रमों का अध्ययन तथा क्रियात्मक प्रशिक्षण का प्रबंध था।

(8) कार्तिकेय स्थान (कार्तिकेय संकाय): यह संकाय सैनिक संगठन से सम्बन्ध रखने वाले पाठ्यक्रमों की शिक्षा का प्रबन्ध करता था। सेना के विभिन्न संगठन किस प्रकार बनाये जाय, व्यूह रचना किस प्रकार की जाय, शत्रुओं का अभियान योजनाओं तथा स्वयं अभियान करने आदि पाठ्यक्रम की शिक्षा दी जाती थी।

इन उपर्युक्त आठों संकायों में वर्णित विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों को भी सुविधा एवं आवश्यकतानुसार समावेश कर लिया जाता था।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में विद्यमान शिक्षा संकायों की भांति प्राचीन काल में भी विभिन्न विषयों से सम्बन्धित शिक्षा संकाय होते थे।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

शोध में विद्यालय, महाविद्यालय और आवासीय विद्यालयों का चयन किया गया। इसमें राजकीय और गैर राजकीय दोनों ही प्रकार के विद्यालय और महाविद्यालय सम्मिलित है। प्रत्येक राजकीय और गैर राजकीय विद्यालयों, महाविद्यालयों और आवासीय विद्यालयों से 60 विद्यार्थियों और 15 शिक्षकों का चयन किया गया।

परिकल्पना

पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध उपकरण

अनुसंधान में परिकल्पना के परीक्षण के लिए आंकड़ो का संग्रह उपकरणों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने दो उपकरणो का प्रयोग किया है। विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली और शिक्षकों के लिए प्रश्नावली।

ISSN: 0974-0066

विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	विद्यार्थियों के प्रकार	संख्या	सार्थकता अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	15.65	3.03	0.063	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	16.60	1.84		

विद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	शिक्षकों का प्रकार	संख्या	सार्थक अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विद्यालय के शिक्षक	10	9.15	2.66	5.304	सार्थक अंतर है।
		गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक	10	10.35	2.58		

आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	विद्यार्थियों के प्रकार	संख्या	सार्थकता अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	8.50	2.16	-0.600	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	8.90	2.04		

आवासीय विद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ISSN: 0974-0066

क्रम	आयाम	शिक्षकों का प्रकार	संख्या	सार्थक अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विद्यालय के शिक्षक	10	10.45	3.46	-0.717	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षक	10	10.15	2.66		

आवासीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	विद्यार्थियों के प्रकार	संख्या	सार्थकता अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थी	50	7.60	1.84	1.482	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थी	50	7.85	1.30		

आवासीय विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	शिक्षकों का प्रकार	संख्या	सार्थक अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विश्वविद्यालय के शिक्षक	10	10.95	2.37	-1.894	सार्थक अंतर नहीं है।

		गैर राजकीय विश्वविद्यालय के शिक्षक	10	12.30	2.13		

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	विद्यार्थियों के प्रकार	संख्या	सार्थकता अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	7.80	2.22	-2.987	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी	50	9.60	1.54		

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विकास के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्रम	आयाम	शिक्षकों का प्रकार	संख्या	सार्थक अंतर			
				माध्य	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
1	**पाठ्यक्रम**	राजकीय विश्वविद्यालय के शिक्षक	10	8.04	2.10	1.216	सार्थक अंतर नहीं है।
		गैर राजकीय विश्वविद्यालय के शिक्षक	10	8.24	2.05		

उपरोक्त सारणियों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि

विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ISSN: 0974-0066

विद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर है।

आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

आवासीय विद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

आवासीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

आवासीय विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विश्वविद्यालय के शिक्षकों के आधार पर पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणाली व विश्वविद्यालय शैक्षणिक प्रणाली में विकास के पाठ्यक्रम में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी, राधाकुमुद. (1974). प्राचीन भारतीय शिक्षा. दिल्ली: मोती लाल बनारसीदास. पृ0 333।
2. मनुस्मृति, 1.23, सम्पादक, शास्त्री, पं0 हरगोविन्द (2003). वाराणसी: चौखम्भा संस्कृत भवन. पृ0 12।
3. कृत्यकल्पतरु दान काण्ड, पृ0 207,213, उद्धृत मिश्र, जयशंकर (1986). प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास. पटना: बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृ0 502।
4. उत्तररामचरित, 2.3, सम्पादक, शर्मा, डॉ0 रामाधार (2005). वाराणसी: भारतीय विद्याभवन. पृ0 127।
5. मुखर्जी, राधाकुमुद. (1974). प्राचीन भारतीय शिक्षा. दिल्ली: मोती लाल बनारसीदास. पृ0 106-110।

ISSN: 0974-0066

6. मुण्डकोपनिषद, 1.1.5, सम्पादक, पोद्दार, गोस्वामी, शास्त्री (2014). उपनिषद अंक. गोरखपुर: गीता प्रेस. पृ0 269।
7. तैत्तिरीय उपनिषद, 1.2, सम्पादक, पोद्दार, गोस्वामी, शास्त्री (2014). उपनिषद अंक. गोरखपुर: गीता प्रेस. पृ0 320।
8. ऋग्वेद, 7.130.5, सम्पादक, शर्मा, पं0 श्रीराम आचार्य (2002). बरेली: संस्कृति संस्थान. पृ0 1107।
9. डॉ0 कृष्ण कुमार (1999). प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति. नई दिल्ली: श्री सरस्वती सदन. पृ0 265।
10. महाभाष्य, 2.5.8, व्याख्याकार, मिमांसक, युधिष्ठिर (2006). सोनीपत: रामलाल कपूर ट्रस्ट. पृ 27।
11. डॉ0 कृष्ण कुमार (1999). प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति. नई दिल्ली: श्री सरस्वती सदन. पृ0 266।
12. निरुक्त, 1.18, सम्पादक, शर्मा, प्रो0 उमाशंकर (1977). वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन. पृ0 31।
13. ऋग्वेद, 10.71.5, सम्पादक, शर्मा, पं0 श्रीराम आचार्य (2002). बरेली: संस्कृति संस्थान. पृ0 1694।
14. डॉ0 कृष्ण कुमार (1999). प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति. नई दिल्ली: श्री सरस्वती सदन. पृ0 266।